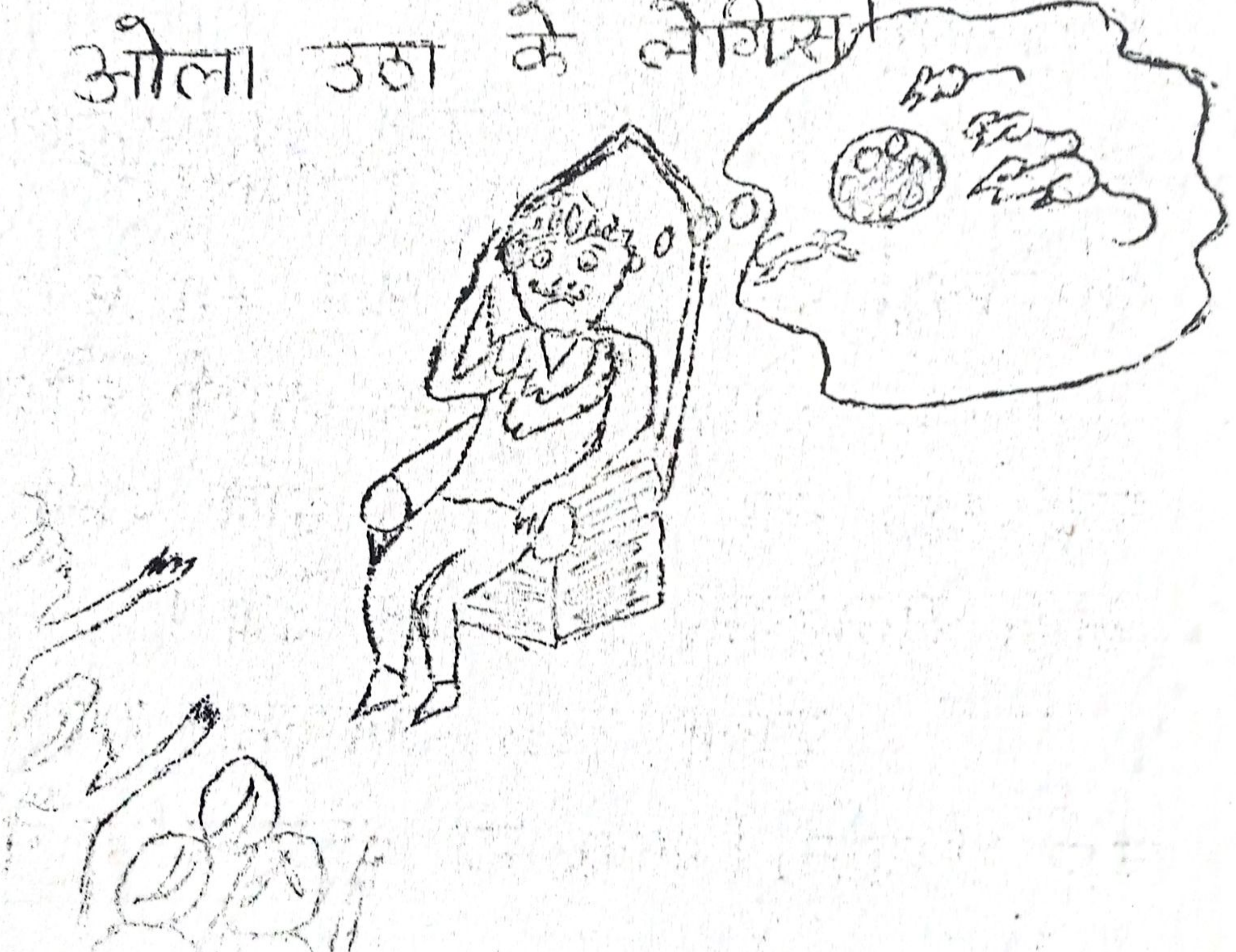


कहानी

लबरा राजा

एक झन राजा रिहिस, वो
हर अब्बड़ लबारी मारे।
एक दिन लबरा राजा हा, सब्बो परजा मन ला बला के कहिथे — मैं हा सब्बो परजा मन ला ईनाम देना चाहत हो परजा मन सुन के बड़ खुशी हो जाथे। ओ मन मंत्री करा जाके पूछथे — राजा हमला का ईनाम दिही। मंत्री कहिथे - महूँ नई जानव।
तब राजा सब्बो परजा ला कहिथे मैं तुमन ला चार दिन बाद सोन के चार - चार मुहर देहूँ।

चार दिन बाद सब्बो परजा मन राजा करा आथे अऊ ईनाम बर कहिथे। राजा हा मुँह ला ओन्दरा के कहिथे - काली रात के अड़बड़ मुसुआ मन महल मा घुसरगिस। मैं हा तुमन बर थाली मा सोन के मुहर रखे रेहेंव, ओला उठा के लेगिस।



परजा मन समझगिस के राजा हा बहाना करत हे, सब्बो झन अपन अपन घर चल दिन।

परजा मा रामू नाम के एक झनडरा रिहिस। ओ हर सोचिस ए लबरा राजा ला तो सबक सीखाना चाही।

एक दिन रामू राजमहल मा आके राजा करा बिनती करिस। राजा मोर घर मा एक महात्मा आए हे, अउ काली मोर घर [redacted] मा पूजा पाठ होवे, रानी अउ राजकुमार ला भेज देबे।

रानी अउ राजकुमार रामू घर आइन। रामू हा मौका पा के

राजकुमार ला लुकादिस। जाये के
बेरा मा रानी हा राजकुमार ला खोजिस।



नई पाइस तहा रोवत-रोवत महल लहुटगिस।

राजा हा सब घटना ला सुनीस तहां बड़ गुसियागिस। रामू ला बुलाईस अऊ बोलिस- मोर राजकुमार तोर घर मा गे रहिस, बता मोर राजकुमार कहांगिस।



रामू हा मुँह ला ओंदरा के कइथे- का बताओ राजा, तोर महल के मुसुआ हा काली मोर कुरिया मा खुसर गिस अऊ राजकुमार ला उठा के ले गे।

राजा ला अपन गलती समझ मा आ गे। तब राजा हा सब झन ला बला के सौ-सौ सोन के मुहर बाँटिस। तब ओकर राजकुमार घलो मिल गे, अऊ राजा के लबारी मारे के आदत सब्बो दिन बर छूट गे।

—x—

संध्या खरे
रुपान्तर रायपुर